卐

ऋग्वेद का रहस्य

सूर्य, वायु और कालचक्र

(सायण vs दयानन्द भाष्य)

प्रस्तुति: आचार्य कपिल

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

संपर्क: 8756390767

वेदों में छिपे ज्ञान को समझने के लिए आचार्यों ने अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाए हैं। आइए, ऋग्वेद के एक प्रसिद्ध मंत्र के माध्यम से समझते हैं कि कैसे एक ही मंत्र में पौराणिक और वैज्ञानिक, दोनों रहस्य छिपे हो सकते हैं।

📜 मूल मंत्र (ऋग्वेद १.३५.३)

> **यातिदेवः प्रवता यात्युद्वता यातिशुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम् ।**
> **आ देवो यातिसविता परावतोऽप विश्वा दुरिता बाधमानः ॥**

📖 शब्दार्थ (Word Meaning)

याति	गमन करता है / जाता है।
देवः	प्रकाशमान / द्योतक।
प्रवता	नीचे की ओर जाने वाले मार्ग (ढलान) से।
उद्वता	ऊपर की ओर जाने वाले मार्ग (चढ़ाई) से।
शुभ्राभ्याम्	श्वेत / शुद्ध / निर्मल।
यजतः	पूजनीय / संगति करने योग्य।
हरिभ्याम्	दो अश्वों से (सायण) / कृष्ण और शुक्ल पक्ष से (दयानन्द)।

सविता	सूर्यदेव / सूर्यलोक।
परावतः	दूर देश से / दूर के मार्गों से।
विश्वा दुरिता	सम्पूर्ण पापों को / सभी दुखों-कष्टों को।
अप बाधमानः	दूर करते हुए।

🏛️ आचार्य सायण का भाष्य (पौराणिक/कर्मकाण्ड परक)

अनुवाद:

दीप्तिमान और पूजनीय सविता देव (सूर्य) कभी नीचे की ओर जाने वाले मार्ग (दोपहर से सूर्यास्त) से और कभी ऊपर की ओर जाने वाले मार्ग (सूर्योदय से दोपहर) से यात्रा करते हैं। वे अपने रथ में जुते हुए दो श्वेत घोड़ों (हरिभ्याम्) के द्वारा यात्रा करते हैं। वे सविता देव सम्पूर्ण पापों का विनाश करते हुए, सुदूर द्युलोक से यज्ञभूमि में आते हैं।

🔬 महर्षि दयानन्द का भाष्य (वैज्ञानिक/खगोलशास्त्रीय परक)

> **अनुवाद:**
>
> जिस प्रकार गतिशील (द्योतक) वायु नीचे के मार्ग और ऊपर के मार्ग से गमन करता है, उसी प्रकार सर्वत्र प्रकाश करने वाला सूर्यलोक अत्यंत शुद्ध कृष्ण-पक्ष और शुक्ल-पक्ष (हरिभ्याम्) के कालचक्र के साथ दूर-दूर के मार्गों से निरंतर गमन करता है। अपनी इस यात्रा में वह सूर्यलोक संसार के समस्त अंधकार, रोगों और दुखों को सब ओर से दूर करता हुआ हमें प्राप्त होता है।

📝 व्याकरणिक व्युत्पत्ति (Grammatical Origin)

वेदों के शब्द 'यौगिक' (धातुओं से बने) होते हैं। आइए इनके निर्माण को समझें:

- **प्रवता / उद्वता:** 'वन' (षण संभक्तौ - सेवन करना) धातु में 'प्र' (नीचे) और 'उत्' (ऊपर) उपसर्ग लगाकर 'क्विप्' प्रत्यय से ये शब्द बने हैं। अर्थ है - नीचे और ऊपर जाने वाले मार्ग।
- **यजतः:** 'यज्' (देवपूजा, संगतिकरण, दान) धातु से 'अतच्' प्रत्यय होकर बना है। अर्थ है - जो पूजनीय या संगति (जुड़ने) के योग्य है।
- **परावतः:** महर्षि यास्क के निरुक्त (३.२६.५) के अनुसार यह दूर देश या सुदूर लोक का वाचक है।
- **विश्वा दुरिता:** यहाँ 'विश्वानि दुरितानि' (नपुंसकलिंग बहुवचन) होना चाहिए था, लेकिन वैदिक व्याकरण के नियम "शेश्छन्दसि बहुलम्" के कारण 'शि' का लोप हो गया है।

⚖️ तुलना: सायण और दयानन्द में क्या अंतर है?

मुख्य अंतर **"हरिभ्याम्"** शब्द की व्याख्या में है।

- **सायण** ने इसे रूढ़ अर्थ में लिया और कहा कि सूर्य के रथ में 'दो श्वेत घोड़े' जुते हैं। यह एक पौराणिक और काव्यात्मक छवि प्रस्तुत करता है।
- **दयानन्द** ने इसे धातुज (यौगिक) अर्थ में लिया। 'हरि' शब्द 'हृ' (हरण करना) धातु से बनता है। जो समय या आयु का हरण करे, वह काल है। इसलिए उन्होंने इसका अर्थ 'शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष' (महीने के दो पखवाड़े) किया, जो वैज्ञानिक कालगणना है।

🎯 निष्कर्ष: दोनों में से कौन सही है?

वैदिक मीमांसा और महर्षि यास्क के 'निरुक्त' (वेदांग) के अनुसार, वेदों में एक ही मंत्र के तीन अर्थ होते हैं: आधिभौतिक (वैज्ञानिक), आधिदैविक (देवतापरक), और आध्यात्मिक।

- **यज्ञ और कर्मकाण्ड की दृष्टि से:** आचार्य सायण का अर्थ सही है क्योंकि यज्ञ में देवताओं का आवाहन उनके साकार/पौराणिक स्वरूप में किया जाता है।
- **तर्क, विज्ञान और सार्वभौमिक सत्य की दृष्टि से:** महर्षि दयानन्द का अर्थ अधिक सत्य, तार्किक और श्रेष्ठ है। अंतरिक्ष में सूर्य किसी रथ पर बैठकर घोड़ों से यात्रा नहीं कर रहा है। वह अपनी कक्षा में गतिमान है और उसकी गति से ही दिन-रात तथा 'शुक्ल-पक्ष व कृष्ण-पक्ष' (हरिभ्याम्) का निर्माण होता है। सूर्य की किरणें (धूप) सचमुच पृथ्वी से बीमारियों (रोगों/दुरिता) और अंधकार का नाश करती हैं।

अंतिम निर्णय: यदि हम वेदों को मात्र एक पुरानी कर्मकाण्डी पुस्तक मानते हैं, तो सायण सही हैं। परन्तु, यदि हम वेदों को ईश्वरीय ज्ञान और विज्ञान का भंडार मानते हैं, तो महर्षि दयानन्द का भाष्य ही वेदों के वास्तविक, यौगिक और वैज्ञानिक स्वरूप को हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

वेदों की ओर लौटें! सत्य को जानें! 🙏